रिकॉर्डः—तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो..... ॐ पिताश्री 4/6/64

ओमशांति। कुछ न कुछ कहना पड़ता है। ओमशांति वा शिवाय नमः, परमात्मा नमः कहते हैं न! यहाँ ओमशांति कहा जाता है। यह है अपना और बाप का परिचय देना। यह महिमा भक्त गाते हैं— त्वमेव माताश्च पिता त्वमे...। तुम बच्चे जानते हो, जिसकी महिमा भक्त लोग गाते आते हैं भक्तिमार्ग में, आज वह बाप सन्मुख बैठे हैं। ज़रूर सन्मुख था। अब फिर सन्मुख बैठे हैं। यह बातें बच्चे जानते हैं। भक्त नहीं जानते, सिवाय तुम्हारे। तुम बच्चे ही बाप के सन्मुख बैठे हो। तुम जानते हो, एक ही बाप है, जिसकी यह महिमा हो रही है। वह बाप तुम बच्चों को कितना सुख दे रहे हैं, जो फिर तुम कब दुःखी नहीं होने वाले हो 21 जन्मों के लिए। ऐसे बाप के सन्मुख तुम बैठे हो। जानते हो, यह हमारा बेहद का बाप है, जो हमको स्वर्ग के सुख देने के लिए सर्विस कर रहे हैं। बाप हमेशा बच्चों को रचकर और उन्हों की फिर सेवा कर लायक बनाते हैं। बच्चों की कितनी मेहनत से पालना करते हैं। रात—दिन यह चिंतन रहता है कि बच्चों की सेवा कर बच्चों को लायक बनावें; जैसे कि बच्चों के गुलाम बन जाते हैं। तो वह है हद की अपनी रचना के गुलाम, यह फिर है बेहद का बाप। यह भी कहते हैं— बच्चे, पूरा वर्सा लेकर स्वर्ग के मालिक बने। बच्चों पर हमेशा रहम करना होता। जो सेन्सीबुल बाप होंगे, वह कहेंगे— बच्चों को क्यों न साथ—2 यह सच कमाई भी करावें। लौकिक बच्चों की स्थूल पालना तो आधा कल्प से करते हैं। बच्चों की पालना कर बड़ा किया, लायक बनाया, बच्चे के लिए विल (**will**) किया। बस, शरीर छोड़ा, जाकर फिर दूसरा जन्म लेंगे। वह हुआ हद का बाप। यह तो है बेहद का बाप। वो भी हद के ब्रह्मा है। रचना रच, फिर उनके गुलाम बनते हैं। बहुत मेहनत करनी पड़ती है— कहाँ बच्चे कुसंग में खराब न हो जाएँ, नाम बदनाम न करें; परन्तु वह हो गया अल्प काल का सुख; फिर भी पता नहीं बच्चा सपूत निकले व कपूत। कई ऐसे कपूत भी निकलते हैं, जो एकदम खाना खराब कर देते हैं। बाप की मिल्कियत को एकदम उड़ा, चट कर देते हैं; इसलिए बड़ी सम्भाल करनी पड़ती है। बेहद के बाप को भी कितना फुरना रहता है। कहते हैं— तुम भी वर्सा लो और फिर अपनी रचना को वर्सा दिलाने के भी निमित्त बनो; परन्तु कोई कपूत बच्चे होते तो बाप का कहना न मानते। बाप कहे, पढ़ाई पढ़ो तो पढ़ते नहीं। पवित्र नहीं बनते। कोई मुश्किल कोटो में कऊ, कोऊ में कोई आज्ञाकारी निकलते हैं। यहाँ तो श्रीमत मिलती है। तुम मात—पिता.... यह एक की ही महिमा है; परन्तु मनुष्य जानते नहीं। कृष्ण के आगे, ल० के आगे, ल०ना० के आगे कहेंगे— तुम मात—पिता...। यह भी अंधश्रद्धा हुई न! अब ल०ना० तो स्वर्ग के थे, अपनी प्रालब्ध भोगते थे। उनको तो अपने बच्चे थे, हम उनको कैसे कहते— तुम मात—पिता....! वास्तव में, यह महिमा है ही एक की। गीत में भी सुना— ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा, सबका सद्गति दाता, सबको स्वर्ग—शांतिधाम ले जाने वाला। तो ऐसे बाप की मत पर चलना पड़े। समझते भी हैं, मात—पिता से 21 जन्मों के लिए स्वर्ग के सुख घनेरे मिलते हैं; परन्तु ऐसी श्रीमत पर भी कोई मुश्किल चलते हैं। बहुत ऊँच वर्सा मिलता है। बाप कहते हैं— मैं तुम बच्चों के लिए तली पर बहिष्त लाता हूँ। जब श्रीमत पर चलो तब तो लायक बनो। कदम—2 पर मत लेनी है। मत पर न चलते तो ऊँच पद पाय न सकते; नहीं तो विश्व का मालिक बनना बहुत ऊँच बात है। स्वर्ग में ल०ना० का राज्य था। स्वर्ग कहाँ है, किसको पता नहीं। आगे हम भी कहते थे— फलाना स्वर्गवासी हुआ अथवा सन्यासी कोई मरा तो कहेंगे— ज्योति ज्योत समाया; परन्तु जानते कोई नहीं। मुक्ति व जीवनमुक्ति दाता है ही एक बाप। वह न आए तब तक कोई जा नहीं सकते। वह है निराकारी दुनिया। निराकारी बाप, निराकारी आत्माएँ वहाँ रहती हैं, जिसको परमधाम भी कहा जाता है। साइंस घमण्डी तो समझते हैं— यहाँ ही जन्मते और मरते हैं; जैसे मच्छर निकलते हैं, फिर मर

जाते हैं। सृष्टि के चक्कर का उनको कुछ भी पता नहीं है। सर्वव्यापी के ज्ञान से कुछ भी समझ न सके। अब बाप तुमको मिला है। कहते हैं– बच्चे, वापस चलना है न! अब मैं कल्प पहले मुआफिक आया हूँ सबको ले जाने। तुम्हारी आत्मा में खाद पड़ गई है। सबकी आत्माएँ तथा शरीर आयरन एज्ड हो गए हैं, उनको फिर से सतोप्रधान बनाना है। तुम बच्चों की आत्माएँ सतोप्रधान थीं, उसको कहा जाता था– गोल्डन एज्ड वर्ल्ड। पवित्र आत्मा, पवित्र शरीर था। जैसा सोना वैसा जेवर। वह ही सच्चा जेवर अब क्या हो गया है! दो कै(रेट) भी नहीं, एक परसेन्ट भी सच्चा सोना न रहा है, खाद पड़ी हुई है। अब बाप कहते हैं– सिर्फ मुझ बाप को याद करो तो सच्चे सोने बनते जावेंगे, आत्मा उड़ने लग जावेगी। अब पर टूटे हुए हैं। अब जैसा पुरुषार्थ करेंगे वैसा पद पावेंगे। कितनी ऊँच पढ़ाई है। भगवानुवाच्य– मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। तुम राजाओं का राजा बनेंगे। विकारी पुजारी राजाओं के भी पूज्य बनेंगे। गाया भी जाता है– आप ही पूज्य, आप ही पुजारी। तुम जानते हो– हम सो पूज्य देवी–देवता थे, फिर हम सो चंद्रवंशी पूज्य बने। हम सो पूज्य अब फिर पुजारी बने हैं, फिर बाप आकर पुजारी से पूज्य बना रहे हैं। अब भक्ति मुर्दाबाद; ज्ञान जिंदाबाद होता है। ब्रह्मा की रात मुर्दाबाद; ब्रह्मा का दिन जिंदाबाद। ब्रह्मा और ब्रह्माकुमार–कुमारियों की रात अब पूरी होती है। रात कब से शुरू होती है, यह शास्त्रों में नहीं है। ब्रह्मा का दिन है– सतयुग–त्रेता। द्वापर की आदि से फिर रात्रि शुरू होती है। यह सब बातें तुम बच्चों की बुद्धि में– हम 84 जन्म पूरे कर आए, अब फिर से राजभाग भोगेंगे। सतयुग में यह ज्ञान न रहेगा। वहाँ है प्रालब्ध। भल वहाँ भी तुम बाप से वर्सा लेते हो; परन्तु वह इस समय की प्रालब्ध है, जो 21 जन्म चलती है। भारत पर ही सारा खेल है। सतयुग में जो दैवी राज्य था, वह अब आसुरी राज्य है। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। शास्त्रों में तो क्या–2 बैठ लिखा है– जुआ खेल राज हराया। अब कौरवों–पांडवों पास राज है कहाँ! कैसे गंदी–2 बातें लिख दी हैं! दिखाते हैं, द्रौपदी को पाँच पति थे। अरे, हिन्दू नारी का एक पति होता है, पाँच कैसे होंगे! पुरुष लोग दो/चार स्त्रियाँ रखते हैं; जैसे कृष्ण के लिए भी लिख दिया है– 16108 रानियाँ थीं। अब एक तरफ लिखते हैं– कृष्ण भगवानुवाच्य, इनको इतनी रानियाँ, भगाया, यह किया। यह सब हैं नॉनसेन्स बातें। बाप कहते हैं, इनको ईविल बातें कहा जाता है। हियर नो ईविल, सी नो ईविल– बंदर का चित्र दिखाते हैं। इस समय मनुष्य बंदर मिसल हैं; इसलिए बंदर की शक्ल दिखाते हैं। बात इस समय की है। इनको कहा जाता है– रौरव नर्क। बिच्छू–टिंडन मिसल एक/दो को मारते–काटते रहते हैं। बच्चे बाप को खून कर लेते। देखते हैं, बाप मरता ही नहीं, हमको गद्दी कैसे मिलेगी! तो फिर ज़हर की गोली आदि खिलाए मारने की कोशिश करते। बहुत गंद है! बाप कहते हैं, माया ने सबको बिल्कुल डर्टी (बूट्स) बनाय दिया है। भारत हेविन था; भारत हेल है। 84 जन्म भी भारतवासियों के ही हैं। बाप कितनी समझानी देते हैं। कहते हैं– आई एम मोस्ट ओबीडियेन्ट फादर सर्वेन्ट, टीचर सर्वेन्ट, सद्गुरु सर्वेन्ट। मैं अब आया हूँ। पण्डे लोग यात्रुओं के सर्वेन्ट होते हैं रास्ता बताने वाले। अभी मैं तुम बच्चों को स्वर्ग में ले चलने लिए गाइड बना हूँ, लिबरेट करता हूँ। हिस्ट्री रिपीट ज़रूर होगी। ग्रंथ में भी है न– होसी भी सत्..... एक ओंकार, सत् नाम..... यह उसकी महिमा है। एक तरफ कहते हैं– अजोनि और फिर कहते हैं– सर्वव्यापी है, कुत्ते–बिल्ले सबमें परमात्मा है। तेरे में, मेरे में परमात्मा है। जिधर देखता हूँ, तू ही तू। यहाँ तो हम आए ही हैं मौज करने। खाना–पीना, ऐश करना, बस– ऐसे बहुत हैं। गुरु जिसके अंधले, चेले सत्यानाश। बाप कहते हैं– यह कलियुगी गुरु तुमको डुबोने वाले हैं। सर्वव्यापी का ज्ञान देना माने डुबोना। बाप कितना आकर समझाते हैं। कोई तो झट निश्चय करते हैं– बाप से हम बेहद का वर्सा लेते हैं। इन जैसा स्वीट फादर मिल ही नहीं सकता। स्वर्ग की स्थापना करने वाला बाप है। जब बाप मिले तब ही हम स्वर्ग के मालिक बने। ऐसे बाप को तो झट अपना बनाना चाहिए। बाप कहते हैं– मुझे बच्चे चाहिए, जो कल्प पहले बने थे।

फिर सपूत या कपूत नहीं आने वाले हैं। कल्प पहले भी अपना खाना खराब किया था। न अपना खाना आबाद करते हैं, न बच्चों का, न स्त्री का। क्रियेटर के ऊपर रिस्पॉसिबुलिटी है– बच्चों को भी स्वर्ग का मालिक बना(वे)। पहले तो अपन पर रहम करें। ऐसे नहीं, बाबा कृपा करेंगे, सब ल०ना० बन जावें। नहीं। यह बड़ा भारी इम्तहान है। 8 को ही स्कॉलरशीप मिलती है। फिर 108 हैं। लॉटरी होती है न! बाप कहते हैं– देह सहित, देह के संबंध जो कुछ हैं, सबको भूल जाओ। अपन को नं(गा) समझ, मुझे याद करो। देह–अभिमान छोड़ो, अपन को आत्मा निश्चय करो। ऐसे नहीं कि तुम परमात्मा हो। वह फिर आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। आत्मा जाकर परमात्मा में लीन होगी, तो भी उनको परमात्मा नहीं कहेंगे, न परमात्मा में लीन होंगे। न; परन्तु बाप कहते हैं– आत्मा कब लीन होती नहीं है। यह ड्रामा अनादि है। सब एक्टर्स हैं। 500 करोड़ हैं। उन सबको अपना पार्ट मिला हुआ है, जो बजाना है। हर एक मनुष्य मात्र की आत्मा में यह इमपेरीशेबल पार्ट भरा हुआ है। बाप बिगर कोई समझाय न सके। बाप ही आकर तुम बच्चों को आदि–मध्य–अंत का ज्ञान दे त्रिकालदर्शी बनाते हैं। चित्रों में देवताओं को तीसरा नेत्र दिखाते हैं। वास्तव में, तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों को होता है। न शूद्रों को, न देवताओं को, तुम ब्राह्मणों को ही ज्ञान का तीसरा नेत्र है, जिससे तुम सबके ऑक्युपेशन को जान जाते हो। शास्त्रों में तो क्या–2 बातें बैठ लिखी हैं! पवन से बच्चा पैदा हुआ। नाक से बच्चा निकल आया। आगे तो सत्–2 करते थे। अब कहेंगे– यह सब झूठ बोलते हैं। यह है ही झूठ खण्ड। सतयुग को सचखण्ड कहते हैं। सचखण्ड और झूठखण्ड की हालत को तुम जानते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। यह पाठशाला है। इसमें अंधश्रद्धा की बात नहीं। अपना धंधा–धोरी सब करते रहो, सिर्फ बाप और स्वर्ग को याद करो। यह मंत्र याद करते रहो तो तुम्हारे सिर पर राजाई का तिलक आ जावेगा। आत्मा ही याद करती है। संस्कार सब आत्मा में रहते हैं। आत्माओं से बात करते हैं, मैं तुम्हारा बाप हूँ। कल्प पहले भी तुमने वर्सा लिया था। सूर्यवंशी में राज किया, फिर चंद्रवंशी में गए। कलाएँ तो कम होती जाती हैं। देवी–देवता धर्म से क्षत्रिय वर्ण में, फिर वैश्य–शूद्र वर्ण में आए। अभी स्मृति आई है, नाटक पूरा होता है। मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत पर न चला, देह–अभिमान में आया तो लगी चोट। फिर बृहस्पत की दशा से बदल राहू की दशा बैठ जाती है। फारकती दी तो रौरव नर्कवासी बन जाते हैं। बाप कहते हैं ऊँच पद पाना है तो अभी रेस करो। अभी ऊँच पद पावेंगे तो कल्प–2 पावेंगे। और तो कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ इस एक जन्म के लिए पवित्रता की प्रतिज्ञा करो तो 21 जन्म तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अब भूत को याद न करो। इस पुरानी दुनिया को भूल जाओ। बाबा तुम्हारे लिए स्वर्ग स्थापन करते हैं। नर्क से दिल हटा दो, शिवबाबा को याद करो तो शिवबाबा स्वर्ग का मालिक बनावेंगे। शिवबाबा शिवालय स्थापन कर रहे हैं। स्वर्ग माना ही शिवालय, जहाँ चेतन देवी–देवताएँ राज्य करते हैं। तो क्या शिवालय के मालिक बनने नहीं चाहते हो? फॉलो फादर–मदर। जो कुछ है सब तुम बच्चों के लिए है। राजा भी तुम बनेंगे, तुम ही थे। अब रंक बने हो। 5000 वर्ष लगे हैं राजा से रंक बनने। भारत सो देवी–देवता थे, अब रंक है। और धर्म वाले की बात नहीं। जो पीछे आते हैं वह स्वर्ग में आय न सके। देवता धर्म वाले और धर्मों में कनवर्ट हो गए हैं; इसलिए हिन्दुओं की संख्या कम दिखाते हैं, नहीं तो भारत की संख्या सबसे बहुत ऊँच होनी चाहिए। तुमको भगवान पढ़ाय रहे हैं तो कितना अटेन्शन देना चाहिए! यह कोई कॉमन पढ़ाई न है, बड़ी वण्डरफुल नॉलेज है! बूढ़े, जवान, बच्चे, सब पढ़ते हैं। बीमार भी पढ़ सकते हैं। बाप–वर्से को याद न किया तो माया थप्पड़ मार देगी। पढ़ाई पर अटेन्शन दो। इन्हों को तो बल्ड से लिखना चाहिए– मैं रात–दिन बाबा को याद करूँगा, शिवबाबा का हाथ पूरा पकड़ूँगा, बाबा जो कहेंगे सो करूँगा। बाप कहते हैं, पहले तो बच्चों आदि की पालना करो, फिर जो बचे, उसमें से दो मुट्ठी, उनसे भी तुमको इतना मिलेगा जितना साहुकार का लाख देने से बनेगा। प्रत्यक्ष फल मिल जाता है। अच्छा, बापदादा, मीठी माँ का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग।